धर्म और व्यवहार में विरोध ...

आज धर्म को व्यवहारिकता में आरोपित करते तो विरोध का सामना करना पड़ता है। कई लोग धर्म के नाम से दूर भागते हैं। लेकिन ऐसा है नहीं। वास्तव में हमें धर्म की सही समझ से अवगत होना होगा। तभी वह हमारे जीवन में अपनाने में कठिन नहीं लगेगा।

पहली बात तो यह है कि धर्म और व्यवहार में कभी भी विरोध खड़ा नहीं होता है। वह असंभव है। जैसे प्रकाश और अंधकार में कभी भी विरोध खड़ा नहीं होता, ऐसे ही जहां प्रकाश है, वहां अंधकार हो ही नहीं। तब विरोध खड़ा हो ही कैसे सकता है उपस्थित प्रकाश और अनुपस्थित तो एक ही साथ होनी चाहिए न। और ऐसा भी नहीं होता है। जहां प्रकाश है, वहां अंधकार नहीं हैं। जहां प्रकाश नहीं है, वहां अंधकार है। असल में अंधकार का अर्थ ही है, प्रकाश का न होना। उसकी अपनी कोई सत्ता नहीं है। वह तो बस अभाव है किसी का ; अनुपस्थिति है किसी की। ऐसा ही व्यवहार है। ऐसा ही संसार है । ऐसा ही अज्ञान है । ऐसा ही अधर्म है। वे सब धर्म नहीं हैं, तभी तक वे हैं।

ब्र.कु. गंगाधर

दूसरी बात यह है कि उधार, सुने हुए धर्म को हम धर्म मान लेते हैं। इससे ही कठिनाई खड़ी होती हैं। साधारणत: हमारे लिए व्यवहार तो है सत्य और धर्म है कोरा शब्द , इसलिए ही दोनों में विरोध खड़ा होता है। और ध्यान रहे कि यह कहीं -कहीं नहीं, कभी -कभी नहीं, वरन हर कहीं और हर पल खड़ा होता है। यही स्वाभाविक है । यह होगा ही , क्योंकि अंधकार है वास्तविक और प्रकाश है केवल विश्वास। विश्वास अंधकार को तो मिटाता ही नहीं , उलटे हमें और अंधा कर जाता है। प्रकाश चाहिए , प्रकाश का विश्वास नहीं। प्रकाश के विश्वास से अंधकार नहीं मिटता हैं। धर्म चाहिए, धर्म का विश्वास नहीं। धर्म से व्यवहार रूपांतरित होता है और परमार्थ और व्यवहार एक ही हो जाते हैं। या ऐसा कहें तो भी ठीक है कि व्यवहार ही रह जाता है। और जो शेष रह जाता है, उसमें कोई द्वंद्व नहीं है, इसलिए कोई दुविधा भी नहीं है। तीसरी बात यह है कि अलग-अलग परिस्थिति में अलग-अलग मार्ग नहीं हैं। और न ही अलग-अलग सहीपन है। मार्ग तो एक ही है और जो सही है , वह भी एक ही है। और उस एक का नाम ही धर्म है। उसे जानते ही सभी परिस्थितियां मूलत: समान हो जाती हैं। आकार तो उनके भिन्न रहते हैं। लेकिन आत्मा भिन्न नहीं रह जाती है।

जैसे एक अंधा आदमी सोच सकता है कि अलग-अलग अंधकारों में अलग अलग प्रकाश आवश्यक होते होंगे या अलग अलग स्थितियों के मार्ग खोजने के लिए अलग-अलग आंख होती होगी, ऐसा ही हमारा यह सोचना भी हैं।

चौथी बात यह है कि धर्म को खोजें । धर्म और व्यवहार में सामंजस्य को नहीं । सामंजस्य की खोज ही बताती है कि धर्म का अभी पता नहीं हैं। धर्म के आगमन पर तो कभी भी सामंजस्य नहीं खोजना पड़ता है। क्योंकि सामंजस्य के लिए भी वैसा ही द्वैत आवश्यक है जैसा कि संघर्ष के लिए। और धर्म आगमन अद्वैत का आगमन हैं। फिर तो जो है, वही परमार्थ है और वही व्यवहार है। धर्म का आगमन अविरोध का आगमन है। इसलिए फिर न विरोध है किसी से , न सामंजस्य ही ।

पांचवी बात यह है कि धर्म को, स्वयं को छोड़ और कहीं न खोजें ,क्योंकि और कहीं से भी मिले धर्म से आपकी समस्या नहीं मिट सकती है। वस्तुत: तो और कहीं से मिले धर्म से ही तो वह समस्या पैदा हुई । उधार धर्म अनिवार्यत: समस्या है, ऐसी समस्या जिसका कि कोई भी समाधान नहीं हैं। क्योंकि उधार धर्म स्वयं को समाधान मान लेता है , जो कि वह नहीं हैं। और ऐसी समस्या का कोई भी समाधान नहीं है, जो कि स्वयं को ही समाधान मानती है। ऐसी बीमारी का इलाज ही क्या हो सकता है। जो कि स्वयं को स्वास्थ्य समझाती हैं लेकिन स्वयं धर्म निश्चय ही समाधान है। पर वह मिलता है स्वयं में स्थित होने के अतिरिक्त समाधान और कहीं से मिल भी कैसे सकता हैं । धर्म को खोजें अर्थात स्वयं को खोजें । शास्त्र से बचें , शब्द से बचें। स्वयं में ही सत्य हैं। उसे समझना है। वहीं है धर्म। उसे जानकर फिर कुछ भी जानने को शेष नहीं रह जाता है और उसे जानते ही सब समस्याएं गिर जाती हैं, सब सवाल मिट जाते हैं।

अलौकिक सुख प्राप्त करने के लिए अनासक्त होना होगा

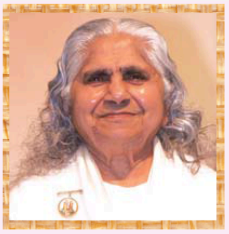
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

प्रश्न - दादी जी, आपने ब्रह्मा बाबा के जीवन में विशेष कौन-सी बात देखी ?

दादीजी - प्यारे ब्रह्मा बाबा तो त्याग, तपस्या और सेवा की प्रतिमूर्ति ही थे। उनके रोम-रोम में ये तीनों विशेषताएं व्याप्त थीं। बाबा से सारा सिंध प्यार करता था, लेकिन शिवबाबा की प्रवेशता के बाद न जाने लोक-लाज के कारण कितने विघ्नों का सामना करना पड़ा। वास्तव में यज्ञ की स्थापना से लोक-लाज, कुल-मर्यादा, स्वयं के देह तथा देह के सम्बन्धियों और पदार्थों का त्याग किया। जितने बाबा त्याग-मूर्त थे, उतने ही तपस्वीमूर्त भी थे, निरंतर तपस्या में खोये हुए नजर आते थे। वैसे ही बाबा अथक सेवाधारी बनकर अनेक आत्माओं की सेवा पर दिन-रात तत्पर रहते थे। उनके हर कर्म में सेवा समायी हुई थी, इसलिए ही लाखों हृदयों में आदर्श बन प्रतिष्ठित हुए।

प्रश्न -दादी जी, तपस्या के लिए कौन-सी बातों का त्याग आवश्यक है ? क्या त्याग के बिना तपस्या सम्भव नहीं है ?

दादीजी -तपस्या अर्थात् सदा एक परमात्मा की याद की लगन में मग्न रहना और इसके लिए विकारों का, बुराइयों का तथा अवगुणों का त्याग अनिवार्य है। जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं, ऐसे ही तपस्या द्वारा प्राप्त अलौकिक सुख और दुनिया के व्यक्ति-वैभवों से प्राप्त लौकिक सुख एक साथ अनुभव नहीं हो सकते। लौकिक बातों के त्याग के बिना तपस्या हो नहीं सकती। जैसे शंकर के आगे शिवलिंग दिखाते हैं, शंकर एकदम अशरीरी होकर एक शिव के ही ध्यान में मग्न है, ऐसे ही हम अनासक्त वृत्ति से निराकारी स्थिति में स्थित होकर, तपस्या करें।

प्रश्न -दादी जी, पुरातन काल में ऋषि गहन तपस्या करने के लिए घर-बार का त्याग करके जंगल में जाते थे, क्या लौकिक व अलौकिक जिम्मेवारियों को सम्भालते हुए गहन तपस्या सम्भव है ?

दादीजी -पुरातन काल में ऋषि हठ से जंगल में जाकर तपस्या करते थे, क्योंकि तपस्या के लिए आवश्यक है पवित्रता का बल और एकाग्रता की शक्ति की। परमात्मा से डायरेक्ट सम्बन्ध न होने से उनको दोनों बातों की कमी महसूस होती थी। लेकिन अभी परमात्मा से सम्बन्ध होने के कारण उनकी मदद से लौकिक तथा अलौकिक जिम्मेदारियों को सम्भालते हुए भी पवित्रता और एकाग्रता से गहन तपस्या कर सकते हैं। हमें प्रवृत्ति छोड़नी नहीं, लेकिन बदलनी है।

प्रश्न -दादी जी, बाबा के त्यागी जीवन को देखकर आपको कौन-सी प्रेरणा मिली ?

दादीजी -बाबा के बेहद के त्यागी जीवन को देखने से मुझे त्याग से बड़ा प्यार रहा है। मैं समझती थी कि त्याग, त्याग नहीं लेकिन भाग्य है। भाग्यवान वह है जिसकी आंख कहीं डूबती नहीं। वैसे मेरा लौकिक नाम 'जानकी' था, बाबा मुझे 'जनक' नाम से पुकारते थे, जिससे मुझे प्रेरणा मिलती थी कि मुझे विदेही और ट्रस्टी होकर रहना है। इसलिए विदेहीपन की स्थिति को पाने की लगन सदा रही और ट्रस्टी समझने से इच्छाओं का त्याग स्वत: होता गया, जिससे स्वत: ऊँची स्थिति की अनुभूति होती रही।

मैं अमृतवेले सर्वशक्तिवान बाप के समीप बैठकर अद्भुत शक्तियों की अनुभूति करती हूँ। ऐसा महसूस होता है कि तप साधना से प्राप्त शक्तियों से भविष्य में अनेक कार्य कराने हैं। जैसे-जैसे तपस्या बढ़ती गई, कर्मों में सत्यता की शक्ति बढ़कर सेवा में सफलता मिलती रही। बापदादा ने मुझे सन् 1976 में इशारा दिया था -शाम को 4.30 बजे से 5.30 बजे तक योगाभ्यास करने के लिए, जिससे वायुमण्डल शक्तिशाली बनता जाए। तो हर रोज इस समय मुझे बहुत खींच होती है और योगाभ्यास में बहुत अच्छे अलौकिक अनुभव होते रहते हैं। साक्षीपन की स्थिति का अभ्यास बहुत अच्छा रहा जिससे स्थिति बिल्कुल न्यारी-प्यारी रही। संकल्प-बोल-कर्म सफल हुए।

अलौकिक सुख प्राप्त करने के लिए अनासक्त होना होगा

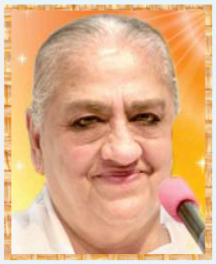
दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

तपस्या ही हमारे ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। इसी तपस्या को हम सहज योग कहते हैं। और योग का अर्थ याद है। हमने देखा कि तपस्या शक्तिशाली भी है तो सहज भी है। तो पहले हम अपने आपमें चेक करें कि सचमुच हम जो कहते हैं सहज योगी, वह सहज अनुभव होता है? अगर योग कभी सहज, कभी मुश्किल अनुभव होता है तो मुश्किल के समय क्या हम योगी हैं या योद्धे हैं? जब कोई बात होती है तब योग में युद्ध चलती है तो क्या वह सहज योग हुआ ? ब्राह्मण जीवन में चेक करना है कि क्या मैं सदा योगी जीवन में रहता हूँ या कभी योगी जीवन में, कभी योद्धे जीवन में? योग माना बाबा की याद निरंतर नहीं है तो उसको योगी जीवन नहीं कहा जायेगा। योग लगाने वाला कह सकते हैं, योगी जीवन वाला नहीं। जब तक शरीर में हैं तब तक जीवन में हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि एक घण्टा जीवन नहीं है बाकी जीवन है। तो योगी जीवन का अर्थ यही है कि निरंतर हमारा योग सहज रहे। योग सहज तब हो सकता है, तपस्या तब सफल हो सकती है जब हमारा बाप से सच्चा प्यार है। बाबा का हमसे प्यार है उसका सबूत है जब कोई भी परिस्थिति आती है और दिल से बाबा को याद करते हैं तो बाबा उसी समय प्रत्यक्षफल देता है। बाबा का प्यार हमसे है लेकिन हमारा भी इतना ही प्यार बाबा से है? प्यार ऐसी चीज होती है जो उसकी याद भुलाना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता। हमारे एक से ही सर्व सम्बन्ध हैं - इसलिए याद सहज है। अगर एक भी सम्बन्ध हमारा बाबा से कम है तो निरंतर योग कभी नहीं रह सकता। कभी-कभी ऐसे होता है कि बाबा का जो मुख्य सम्बन्ध है, बाप, टीचर, सद्गुरू का वो तो ठीक है लेकिन फ्रैन्ड के सम्बन्ध की, मैं सीता हूँ वो राम है -लगता है इन सम्बन्धों की क्या आवश्यकता है? लेकिन देखने में आता है कि कोई भी रास्ता बुद्धि के जाने का होता है और बुद्धि न जावे -ये हो ही नहीं सकता। जब ट्रेन आने वाली होती है तो भल रास्ता बंद करते हैं लेकिन स्कूटर वाले, साइकिल वाले रूकते नहीं, नीचे से चले जाते हैं। यहाँ भी मन बहुत फास्ट जाता है। कहाँ न कहाँ से रास्ता निकाल लेता है। बाबा से यदि कोई एक सम्बन्ध भी अनुभव में नहीं है, कहने में तो कह देते हैं सर्व सम्बन्ध बाबा से हैं, एक ही बाबा हमारा संसार है लेकिन प्रैक्टिकल में कोई भी दैहिक सम्बन्ध में हमारा लगाव है और बाबा से हमारे सर्व सम्बन्ध नहीं हैं तो हमारी तपस्या कभी भी सिद्ध नहीं हो सकती। इसलिए तपस्या को शक्तिशाली और निरंतर बनाने के लिए बाबा से सर्व सम्बन्ध जरूरी है। अभी यही खुशी का, सुख का वायुमण्डल फैलाओ क्योंकि दुनिया में दु:ख बहुत बढ़ रहा है। लेकिन है तो हमारे भाई ही ना, तो जो दु:खी हैं उन्हों को सुख का वायब्रेशन दो। आपको कोई भी देखे, कितना भी मुरझाया हुआ हो आपको देख करके मुस्कराने लगे, अब ऐसी सेवा करके दुनिया को परिवर्तन करना है। इसके लिए मैं अपना फेस, अपनी चलन, अपना बोल जो भी है वो ऐसा करूँ जो हमको देखके दूसरे भी खुश हो जायें। तो यह सर्विस करनी आती है, योग में बैठके सकाश देना यह आता है ना, तो आत्माओं को परमात्मा से हमको सकाश मिल ही रही है। तो वो परमात्मा की सकाश जो है अपने द्वारा औरों को दो। सारी दुनिया आपके लिए सकाश लेने के लिए तरसती है क्योंकि दु:ख तो बढ़ ही रहा है, देखते हैं और सुख चाहते सभी हैं तो आप द्वारा वो सुख और शान्ति की जो सकाश जायेगी ना तो दुनिया परिवर्तन हो जायेगी। तो अभी ऐसी सेवा करेंगे ना, ऐसे नहीं जो टीचर्स हैं वही इस सेवा के निमित्त हैं, हम एक-एक सेवा के लिए निमित्त हैं। अब मन को चेक करो और मन को बिजी रखो। सुबह उठके मन को बिजी रखने का प्रोग्राम बनाके उसी अनुसार सारे दिन चलते रहो, इजी या थोड़ा डिफीकल्ट ? जिन्होंने हाथ उठाये उनके तो प्रॉब्लम फिनिश हो गये, तो अभी जाके अपने क्लासेज में भी सुनायेंगे। तो सभी आल वर्ल्ड नो प्रॉब्लम हो जायेंगे। समस्याओं से स्वयं को भी मुक्त रखेंगे और दूसरों को निर्विघ्न बनायेंगे।